|| हरि ॐ ||

|| जीवनोपयोगी कुंजियां ||

Tips for Successful Life

ॐ वात, पित्त और कफ की जड़े काटने :-

बीमारी होने की ३ चीजे होती हैं वात, पित्त और कफ | आंवले का रस अगर १०-१२ ग्राम सुबह-सुबह ले लो तो ये तीनों प्रकार की बीमारी की जो जड़े हैं वो कट जाएँगी ...आँखों की जलन ठीक हो जायेगी, धातुक्षय वालों का धातु मजबूत हो जायेगा , मासिक अधिक आता हो तो वो नियंत्रित हो जायेगा ..उसमें थोड़ी हल्दी मिला दो |

पूज्य बापूजी Mumbai 4th March'2012

ॐ पति की लंबी आयु हेतु :-

सभी सुहागन देवी याद रखना संध्या के समय थोड़ी देर के लिए सिर ढका हुआ रखती हैं, थोड़ी देर के लिए तो उसके पति की आयु लंबी होती है ...ऐसा मैंने बुज़ुर्ग संतो से सुना है |

- श्री सुरेशानंदजी Mumbai 4th March'2012

ॐ घर में कोई बीमार रहते हों तो :-

जिनके घर में कोई बीमार रहते हैं या किसी को कोई बीमारी रहती हो वे लोग रविवार को लोटे में थोड़ा सा लाल चन्दन डाल दें , लाल फूल गुलाब आदि का एकाध डाल दें , तीसरी चीज अक्षत (चावल के दाने ..कच्चे) डाल दें और चौथी चीज दूर्वा डाल दें ...ये ४ चीज़ें लोटे में डाल कर सूर्य भगवान को अर्घ्य दें | तिल के तेल का दीपक जलाकर दिखा दें और उस दिन नमक मिर्च ना खाएं | फीका भोजन करें ..दूध रोटी, खीर आदि का ...दूध किसी को अनुकूल ना आता हो तो थोड़ा दही ले सकते हैं पर खट्टा ना हो | रविवार को ये करने से आरोग्यता प्राप्त होगी और तेजस्विता बढ़ेगी ..यश बढ़ेगा ऐसे कार्य होगे आपके द्वारा | सूर्य भगवान और गुरुदेव का आशीर्वाद मिलेगा |

- श्री सुरेशानंदजी Navi Mumbai 21st March'2012

ॐ घर में अशांति निवृति हेतु :-

जिनके घर में झगड़े बहुत होते हों और अशांति के कारण वातावरण बड़ा विचित्र रहता हो तो उनको चाहिए नीम के पत्ते घी में डुबाकर गायत्री मंत्र बोलते हुए आहुति डालें | पहले संकल्प कर दें श्वास रोक कर कि हमारे घर में शांति बढ़े ..कलेश ना हो ..झगड़े न हो |

- श्री सुरेशानंदजी Mumbai 4th March'2012

ॐ गर्भवती माताओं के लिए :-

कई आश्रमों में भारतीय नस्ल की ७ अलग-अलग रंगों की देशी गायों का मंदिर बनाया है ...सप्त गौ मंदिर ...अगर उसकी परिक्रमा कोई गर्भवती देवी करती है ...वैसी व्यवस्था की गयी है कि परिक्रमा कर सके ...और अपने हाथों से कुछ गायों को खिलाती जाये और परिक्रमा करती जाये ..तो उसके गर्भ से ऐसा बच्चा जन्मेगा की दुनिया देखेग और ये सप्त गौ मंदिर ..अहमदाबाद आश्रम, इंदौर आश्रम , लुधियाना आश्रम, कोटा आश्रम, और कई आश्रमो में ये व्यवस्था है | कई उसका लाभ उठाते हैं |

- श्री सुरेशानंदजी Navi Mumbai 22nd March'2012

|| हरि ॐ ||

ॐ दिव्य आत्माएं अवतरित करने :-

आपके बेटी में या बहू में कोई आत्मा आये तो उसे सत्संग की cassette सुनाओ ... सत्संग दिखाओं ..पुस्तक सुनाओ तो अच्छी आत्माएं आएँगी |

पूज्य बापूजी Navi Mumbai 22th March'2012

ॐ ब्लोकेज हो तो :-

अदरक का कद्दूकस और गुड़ का कद्दूकस सुबह-सुबह थोड़ा खाए ....श्वास बाहर रख के भगवान का नाम जपें ..ब्लोकेज खुल जायेगा | नींबू और २५ तुलसी के पत्तों का रस कभी-कभी लें ...इससे भी आराम होता है | काहे को by pass surgery करना !!

पूज्य बापूजी Navi Mumbai 22nd March'2012

ॐ हनुमानजी प्रणाम मंत्र :-

मैं जब भी कभी हनुमानजी की मूर्ति के सामने खड़ा होता हूँ तो यही बोलता हूं -

सुमिरी पवनसुत पावन नाम , अपने वश करि राखे राम ।

हे हनुमानजी, आपने रामनाम का ऐसा तो सुमिरण किया कि रामजी को ही आपने अपने वश में कर लिया ।

आप भी कभी जाओ तो ये बोलना क्योंमकि हनुमानजी को जप बहुत अच्छाम लगता है । हनुमानजी के आगे कोई

सिंदुर और चोला न चढ़ाये, नारियल न रखे तो हनुमानजी नाराज नहीं होंगे पर ये बोल दे कि हनुमानजी आपको भगवान का नाम कितना प्यानरा लगता है **सुमिरी पवनसुत पावन नाम , अपने वश करि राखे राम ।** हनुमानजी राजी होंगे ।

- श्री सुरेशानंदजी Mumbai 3rd March'2012

Visit :-
http://www.hariomgroup.org/
http://successful-life-tips.blogspot.com/

|| हरि ॐ ||

ॐ विघ्नs और भय नाशक गणपतिजी के १२ नाम-

भगवान गणपतिजी के बारह नाम नारदपुराण में बताये है, बहुत सुंदर है और फिर 12 नाम बताकर यह कहा है कि इन 12 नामों का जो सुबह शाम उच्चारण करता है उसके जीवन में विघ्न और भय नहीं रहेंगे -

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ।।1।।
प्रथमं वक्रतुडं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।।2।।
लम्बोदरं पंचमं च षष्ठ विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ।।3।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ।।4।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विध्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ।।5।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ।।6।।
जपेग्दणपतिस्तोत्रं षड् भिर्मासैः फ़लं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ।।7।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ।।8।।

- श्री सुरेशानंदजी मुंबई 3rd March' 2012